कैम्पस कनेक्ट

राम लाल आनंद महाविद्यालय का मासिक ई-न्यूज़लेटर

हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग का प्रकाशन | नई दिल्ली, जनवरी 2024 | वर्ष 2, अंक 5, पृष्ठ 4

दो दिनी समारोह में विद्यार्थियों का हुनर

दिव्या

नई दिल्ली। विविधता में एकता के भाव के साथ बीए प्रोग्राम की ओर से दो दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत सेरेनिटी सोसाइटी की संयोजक डॉ. सुनैना शर्मा ने की। कार्यक्रम 28 से 29 नवंबर 2023 तक सेमिनार हॉल में चला। दो दिवसीय कार्यक्रम को पांच भागों में विभाजित किया गया, जिसमें अंतरमहाविद्यालय स्पर्धाओं का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम की प्रथम प्रतियोगिता कल्चरल कैनवास से हुई, जिसमें प्रतिभागियों ने भाग लेते हुए भारतीय संस्कृति से जुड़े चित्रों को एक पन्ने पर उतारा। प्रथम प्रतियोगिता में निर्णायक मंडल के रूप में डॉ. सुनीला हुड्डा और डॉ. देबाश्री दास उपस्थित रहे। दूसरी प्रतियोगिता को फैक्टो मेनिया नाम दिया। पहले चरण में प्रतिभागी को भारतीय संस्कृति से जुड़े अनसुने पहलुओं पर बात करनी थी और दूसरे चरण में प्रश्नावली सत्र हुआ।

इस कार्यक्रम के प्रथम दिन की अंतिम प्रतियोगिता में ट्रेडिशनल टेल्स फैशन शो आयोजित किया गया, जिसमें वेंकटेश्वर कॉलेज, मोतीलाल नेहरू कॉलेज, राम लाल आनंद कॉलेज व अन्य कॉलेजों के छात्रों ने भाग लिया। कार्यक्रम के दूसरे दिन की स्पर्धा को नेटिव नैरेटिव वाद विवाद प्रतियोगिता का नाम दिया गया। इसमें 20 प्रतिभागियों ने विषय के पक्ष और विपक्ष में अपने मत रखे। प्रतियोगिता के विजेता सरनयम पीजीडीएवी कॉलेज से रहे और द्वितीय स्थान पर स्मृति इंद्रप्रस्थ यूनिवर्सिटी से रहीं, वहीं राम लाल आनंद महाविद्यालय से आदित्य पासवान ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। पांचवीं व अंतिम प्रतियोगिता में भारतीय संस्कृति से जुड़े प्रश्नों को पूछा गया। अंत में राम लाल आनंद महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने सभी विजेताओं को पुरस्कार प्रदान दिए।

रामलाल आनंद महाविद्यालय के बीए प्रोग्राम की ओर से आयोजित दो दिवसीय प्रतियोगिताओं में दिखे अनेक रंग।

विकलांगता पर लोगों की सोच बदलने की जरूरत है

श्वेता

नई दिल्ली। आज के समय में विकलांगता एक सामाजिक मुद्दा है, जो व्यक्ति को समाज में समाहित कराने के लिए सहायक होता है। इस विषय पर ज्यादा से ज्यादा बातचीत करके समाज में जागरूकता बढ़ाई जा सकती है। लोगों को सहायता प्रदान करने में सुधार किया जा सकता है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए राम लाल आनंद कॉलेज की सुगम समिति ने 4 दिसम्बर 2023 को 'हर किसी की क्षमता में समावेशन' विषय पर एक सेमिनार का आयोजन किया, जिसमें मुख्य वक्ता डॉ. बाबूलाल मीणा थे।

बाबूलाल मीणा ने इंक्लूसिव एबिलिटी, डिसेबिलिटी पर बात करते हुए बताया कि किस प्रकार उन्हें अपने जीवन में संघर्ष करके आगे बढ़ना पड़ा। इसी प्रकार न जाने कितने विकलांग लोगों को अपने जीवन में संघर्ष करना पड़ता है। मुख्य वक्ता ने बताया कि दिल्ली जैसे शहरों में थोड़ी बहुत जागरूकता है, पर यह जागरूकता गांव या पिछड़े इलाकों में भी होनी चाहिए। उन्होंने लोगों की सोच को बदलने की बात कही। वह कहते हैं कि अगर हम इंक्लूसिव एजुकेशन की बात करते हैं तो उसमें विकलांग लोगों की हिस्सेदारी क्यों नहीं है?

उन्होंने कहा कि उनकी किस्मत उनके लिए बहुत अच्छी थी, पर सबकी किस्मत ऐसी नहीं होती। सरकार ने कई ययोजनाएं बनाईं, पर वह कभी ढंग से लागू नहीं की गईं। आज भी विकलांग लोगों को ध्यान में रखा नहीं जाता। इनमें और भी मुश्किल होती है महिलाओं को, जो विकलांग हैं। यूएनओ का टारगेट 2030 तक समावेशी और सतत आर्थिक विकास का है तो क्या यह समावेशी और सतत आर्थिक विकास बिना विकलांग लोगों को शामिल किए किया जा सकता है। लक्ष्मी बाई कॉलेज में शिक्षक डॉ. बाबूलाल मीणा ने सरकारी भवनों में इंफ्रास्ट्रक्चर की भी बात को उठाया। उन्होंने कहा कि उनका इंफ्रास्ट्रक्चर कभी भी विकलांग लोगों को ध्यान में रखकर नहीं बनाया जाता। अगर कोई व्हील चेयर पर है तो वह कैसे सीढ़ियां चढ़ेगा इस बात का ध्यान रखना चाहिए।

उन्होंने विकलांग लोगों के लिए सेंसिटिविटी रखने का सुझाव दिया। उनका कहना था कि विकलांग लोगों से धर्म के आधार पर भी भेदभाव किया जाता है, इसीलिए सबसे पहले लोगों की सोच को बदलना जरूरी है। संयोजक मिस्टर कप्तान कार्यक्रम के दौरान मौजूद रहे।

डॉ. बाबूलाल मीणा।

डाटा विजुअलाइजेशन का कौशल जरूरी

राहुल गुप्ता

नई दिल्ली। विद्यार्थियों में डाटा विजुअलाइजेशन का कौशल बढ़ाने के लिए पैनेसिया समिति ने एलुमनाइ टॉक का आयोजन किया। इसका विषय डाटा विजुअलाइजेशन इन पायथन था। महाविद्यालय के पूर्व विद्यार्थी मनन कटारिया मुख्य वक्ता के तौर पर आमंत्रित थे।

मनन कटारिया ने विद्यार्थियों को बताया कि डाटा विजुअलाइजेशन क्या होता है, पायथन पुस्तकालयों के माध्यम से डाटा को विजुअलाइज करने के कई तरीके बताए। समिति संयोजिका डॉ. रीटा जैन के साथ कार्यक्रम संयोजक डॉ. कुलदीप चौहान व अन्य अध्यापक मौजूद रहे।

चित्रकारी से एड्स के प्रति किया गया जागरूक

राम कुमार पाण्डेय

नई दिल्ली। एचआईवी के प्रति जागरूकता लाने के लिए राम लाल आनंद महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई ने विश्व एड्स दिवस के उपलक्ष्य में एड्स रेड रिबन सोसाइटी और दिल्ली राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी के सहयोग से चित्रकारी प्रतियोगिता आयोजित की। प्रतियोगिता का उद्देश्य कलात्मक प्रतिभा का प्रदर्शन करने के साथ एचआईवी/एड्स की रोकथाम के महत्व पर जोर देना और उन लोगों को याद करना था, जिन्होंने इस बीमारी के कारण अपना बहुमूल्य जीवन खो दिया है।

प्रतियोगिता महाविद्यालय के सभी पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों के लिए खुली थी। प्रतियोगिता की थीम "याद रखो और प्रतिबद्ध हो" थी।

इस थीम पर आयोजित प्रतियोगिता में महाविद्यालय के सभी विभागों से प्रतिभागियों ने भाग लिया और अपनी कला और थीम के सामंजस्य से चित्रकारी की। प्रतियोगिता के दौरान राष्ट्रीय सेवा योजना के प्रोग्राम ऑफीसर डॉ. अनुराग शर्मा मौजूद रहे। अंत में सभी विजेता विद्यार्थियों को नगद पुरस्कार राशि से नवाजा गया।

विद्यार्थियों को कोडिंग से जोड़ने की पहल

स्मृति

नई दिल्ली। विद्यार्थियों को कोडिंग से जोड़ने के लिए रामलाल आनंद महाविद्यालय की ई–पीपल समिति की ओर से 23 नवंबर 2023 को कोडिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता को दो चरणों में विभाजित किया गया था, जिसमें पहले चरण में विद्यार्थियों के लिए क्विज प्रतियोगिता रखी गई। टीमों में शामिल विद्यार्थियों ने कंप्यूटर वेबसाइट पर प्रश्नों के उत्तर दिए। उसी के साथ अंक हासिल किए। दूसरे चरण में केवल 12 टीमें ही अपना स्थान बना सकीं। बेहतरीन प्रदर्शन करने वाली तीन टीमों ने जीत हासिल की।

विद्यार्थियों को संविधान से परिचित कराया

खुशी शाक्या

नई दिल्ली। संविधान हिंदुस्तान की जान है। भारतीयों के अधिकार की पहचान है। डॉ. भीमराव अंबेडकर के इन शब्दों को ध्यान में रखते हुए विद्यार्थियों को संविधान से परिचित कराने की पहल राम लाल आनंद महाविद्यालय की एनएसएस समिति ने की। समिति ने संविधान दिवस के उपलक्ष्य में 24 नवम्बर 2023 को विद्यार्थियों के लिए ओपन माइक कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें विद्यार्थियों को संविधान से संबंधित कविता, कहानी या कोई भी रचना प्रस्तुत करनी थी। इस कार्यक्रम का आयोजन विद्यार्थियों को संविधान से परिचित कराने व स्वयं को अभिव्यक्त करने का मौका देना था।

सब्जेक्टिव नहीं ऑब्जेक्टिव थिंकिंग अपनाएं

आयुष प्रजापति

नई दिल्ली। गणित में विज्ञान के महत्व को बताने और गणित तथा विज्ञान के आपसी सूत्र को समझाने के लिए गणित विभाग ने सेमिनार सह व्याख्यान आयोजित किया। राम लाल आनंद महाविद्यालय में हुए व्याख्यान का विषय 'रोल ऑफ मैथमेटिक्स टू इंकल्केट साइंटिफिक थिंकिंग' था।

मुख्य वक्ता के रूप में पांडिचेरी यूनिवर्सिटी के सहायक प्राध्यापक डॉ. पंकज शर्मा थे, जिन्होंने गणित के सर्कल यानी वृत्त से शुरुआत कर विज्ञान के फ्रीक्वेंसी और मॉड्यूलेशन के विभिन्न अनुप्रयोगों को समझाने का प्रयास किया। डॉ. पंकज शर्मा ने बताया कि कैसे विद्यार्थी सब्जेक्टिव थिंकिंग से ऑब्जेक्टिव थिंकिंग की ओर बढ़ें। इसके साथ ही मैथ्स और विज्ञान के अर्थ को उनकी परिभाषा तक सीमित न कर उनके प्रोस्पेक्टिव और अप्रोच तक के पहलू को समझना कितना आवश्यक है, इस बात को विद्यार्थियों को समझाया।

मैथ्स इज द स्टडी ऑफ पैटर्न, पैटर्न ऑफ बिहेवियर, पैटर्न ऑफ कर्व, फिगर, ज्योमेट्री से है।

मैथ्स के एप्लीकेशन में क्रिप्टोकरेंसी, लीनियर अलजेब्रा के जरिए डाटा साइंटिस्ट सहित अनेकों अनुप्रयोगों को विद्यार्थियों से साझा किया। साथ ही हाल ही में चंद्रयान मिशन में लैंडिंग, रोविंग के ठीक समय आदि के आकलन में मैथ्स की कितनी बड़ी भूमिका है, जैसी रोचक घटनाओं का उल्लेख करते हुए विद्यार्थियों से चर्चा की। विभाग के प्रभारी डॉ. बसंत कुमार मिश्रा व समिति संयोजक डॉ संदीप भट्ट के साथ समिति उपाध्यक्ष दिया थपलियाल, सचिव अमित मेहता व विभाग के सभी विद्यार्थी कार्यक्रम के दौरान मौजूद रहे।

गणित विभाग ने रोल ऑफ मैथमेटिक्स....विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया।

स्पिक मैके सोसाइटी का ओरिएंटेशन

शिवम

नई दिल्ली। राम लाल आनंद महाविद्यालय में 6 दिसंबर 2023 को स्पिक मैके सोसाइटी का ओरिएंटेशन आयोजित किया गया। इसमें संयोजक डॉ. दीप्ति भारद्वाज, सहसंयोजक डॉ. शची मीणा और प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता उप. स्थित रहे। प्रो. राकेश कुमार ने कॉलेज में भारतीय शास्त्रीय संगीत, नृत्य, लोक, कविता, रंगमंच व पारंपरिक पेंटिंग, शिल्प और योग के बारे में बताया। इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य यह रहा कि विद्यार्थी इन कलाओं के मूल्य और ज्ञान से अपने जीवन और सोच को प्रभावित करें और एक बेहतर इंसान बनने का प्रयास करें।

चुनौती से सीखने को मिला

मुझे राम लाल आनंद महाविद्यालय के हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग द्वारा प्रकाशित किए जाने वाले ई–न्यूज लेटर का संपादन और डिजाइनिंग करने की उत्सुकता हुई। मैंने अपने शिक्षकों से यह बात साझा की। लिहाजा मुझे जनवरी 2024 के अंक की जिम्मेदारी सौंप दी गई। इसमें मुझे संपादक की भूमिका निभानी थी। न्यूज लेटर बनाने से पहले मैंने कभी क्वार्क एक्सप्रेस पर कार्य नहीं किया था, जिस कारण मुझे क्वार्क पर काम करने में दिक्कत हुई। परंतु न्यूज लेटर का निर्माण करते समय मैंने हिंदी टाइपिंग की अहमियत को जाना। लेआउट खींचना सीखा। साथ ही फोटो का चयन करना, हर एक खबर को संपादित करना सीखा। मैंने इस दौरान टीम के साथ मिलकर काम किया।

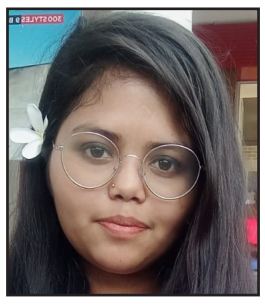

कंचन गुप्ता

मेरे लिए यह अनुभव अलग तरह का था। सबसे महत्वपूर्ण बात मैंने इस दौरान करीब से सीखी कि समय सीमा के अंतर्गत कार्य करना कितना जरूरी है। इस न्यूज लेटर को बनाने के बाद मुझे यकीन है कि यदि मुझे क्वार्क एक्सप्रेस पर कार्य करने का मौका मिला तो मैं बेहतरीन प्रदर्शन कर पाऊंगी।

'कैम्पस कनेक्ट' न्यूज लेटर हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग का एक महत्वपूर्ण कदम है। इसकी सहायता से विद्यार्थियों को पत्रकारिता के कई आयाम जानने व सीखने को मिलेंगे। मुझे उम्मीद ही नहीं बल्कि विश्वास है कि 'कैम्पस कनेक्ट' न्यूज लेटर में काम कर चुके व आगे आने वाले समय में काम करने वाले विद्यार्थी इससे बहुत कुछ सीखेंगे। न्यूज लेटर बनाने के दौरान सहयोग करने वाले अपने शिक्षक और साथियों की मैं आभारी हूं। साथ ही उम्मीद करती हूं कि मेरे बनाए न्यूज लेटर की रूपरेखा आप पाठकों को पसंद आएगी। 'कैम्पस कनेक्ट' का जनवरी 2024 का यह अंक नए साल का पहला अंक है, लिहाजा आप सभी को नए वर्ष की बधाई देते हुए अंक आप सभी के हवाले करती हूं।

लेखक योगेंद्र आहूजा को मिला कथाक्रम सम्मान

फरदीन अनीस

नई दिल्ली। लखनऊ स्थित ऑल इंडिया कैफी आजमी अकादमी निशांतगंज में 5 नवंबर 2023 को कहानीकार योगेंद्र आहूजा को आनंद सागर स्मृति कथाक्रम सम्मान 2023 से नवाजा गया। आयोजन में योगेंद्र आहूजा ने कहा कि बोले गए शब्दों से ज्यादा लिखे गए शब्दों की कीमत होती है। बोले हुए शब्दों में बनावटीपन होता है, लेकिन लिखे गए शब्दों में बनावट की गुंजाइश नहीं होती। लेखन में विचारों की सघनता होती है। इस आयोजन की अध्यक्षता वरिष्ठ कवि नरेश सक्सेना ने की, जिसमें मुख्य अतिथि की भूमिका वरिष्ठ कथाकार प्रियंवद ने निभाई।

योगेंद्र आहूजा

अध्यक्षता कर रहे वरिष्ठ कवि नरेश सक्सेना ने कहा कि 2024 में चीजें नहीं बदलीं तो इस बात की गुंजाइश नहीं कि हम फिर अपने रचनात्मक विचारों की स्वतंत्रता को बरकरार रख पाएं। उन्होंने यह भी कहा कि यह बात लेखकों को समझने की जरूरत है। नरेश सक्सेना के अलावा प्रो. राजकुमार, दलित चिंतक कंवल भारती, वरिष्ठ लेखक महेश वर्मा, कथाकार अखिलेश सहित अन्य लोगों ने भी अपने विचार रखे।

आनंद सागर स्मृति कथाक्रम सम्मान 2023 का चयन करने के लिए 4 अक्तूबर 2023 को निर्णायक मंडल की बैठक हुई थी, जिसमें संयोजक शैलेंद्र सागर, वरिष्ठ कहानीकार शिवमूर्ति, रंगकर्मी राकेश और लेखिका रजनी गुप्त शामिल रहीं। इसी बैठक में योगेंद्र आहूजा को सम्मान देने का फैसला किया गया।

संयोजक शैलेंद्र सागर का कहना था कि योगेंद्र आहूजा हिन्दी कथा साहित्य के विशिष्ट एवं चर्चित छवि वाले व्यक्ति हैं। उन्होंने योगेंद्र आहूजा की उपलब्धियों की व्याख्या करते हुए बताया कि योगेंद्र आहूजा का जन्म तो उत्तर प्रदेश के बदायूं में हुआ था, लेकिन उन्होंने अपनी शिक्षा उत्तराखंड के काशीपुर तथा उत्तर प्रदेश के बरेली जिले से ग्रहण की। योगेंद्र आहूजा के द्वारा लिखी गई पहली कहानी 'सिनेमा' सन् 1991 में प्रतिष्ठित पत्रिका 'पहल' में प्रकाशित हुई थी। इसके बाद मर्सिया, एक पुरानी कहानी, खाना, लफ्फाज, कुश्ती आदि लोकप्रिय कहानियां उन्होंने लिखीं।

शैलेंद्र सागर ने यह भी बताया कि योगेंद्र आहूजा का पहला कहानी संग्रह 'अंधेरे में हंसी' वर्ष 2004 में प्रकाशित हुआ और अभी हाल ही में उनकी पुस्तक टूटते तारों तले प्रकाशित हुई। साथ ही योगेंद्र आहूजा की उपलब्धियों के बारे में बताया कि पूर्व में उन्हें कथा पुरस्कार, परिवेश सम्मान, विजय वर्मा सम्मान, रमाकान्त स्मृति पुरस्कार, स्पंदन सम्मान और प्रेमचंद स्मृति सम्मान मिल चुका है।

अंत में संयोजक शैलेंद्र सागर ने कहा कि आनंद सागर स्मृति कथाक्रम सम्मान में 21 हजार रुपये, सम्मान चिन्ह और पत्रक दिया जाता है। संयोजक ने जानकारी दी कि इससे पहले कथाक्रम सम्मान संजीव, कमलाकांत त्रिपाठी, चंद्रकिशोर जायसवाल, मैत्रेयी पुष्पा, दूधनाथ सिंह, ओमप्रकाश वाल्मीकि, शिवमूर्ति, असगर वजाहत, भगवान दास मा. रवाल, उदय प्रकाश, प्रियंवद, मधु कांकरिया, महेश कटारे, अब्दुल बिस्मिल्लाह, स्वयं प्रकाश, तेजिन्दर, जयनंदन, नासिरा शर्मा, अखिलेश, राकेश कुमार सिंह, जया जादवानी, मनोज रूपड़ा और नवीन जोशी सहित कई लेखकों को दिया जा चुका है।

दोनों जेंडर में समानता की जरूरत है : सुमन

लिंग संवेदीकरण जैसे संवदेनशील मसले पर अपनी संस्था के जरिए *सुमन संजय अग्रवाल* पिछले लंबे समय से काम कर रही हैं। उनकी संस्था का नाम है समर्थ इंडिया फाउंडेशन। पिछले दिनों सुमन जी राम लाल आनंद महाविद्यालय के सामुदायिक रेडियो तरंग 90.0 एफएम की मेहमान थीं। रेडियो तरंग के लिए *प्रभाकर मल्ल* ने उनका साक्षात्कार लिया, जिसमें उनसे जेंडर संबंधी लंबी बातचीत की गई। उसी बातचीत के कुछ अंश 'कैम्पस कनेक्ट' के पाठकों के लिए पेश हैं...

जेंडर सेंसटाइजेशन का मतलब क्या होता है, उसको बताते हुए आप जेंडर और सेक्स के बीच के अंतर के बारे में हमारे श्रोताओं को बताएं।

जब भी हम कहीं कोई फॉर्म भरते हैं तो उसमें एक कॉलम आता है। उसमें जेंडर लिखा होता है, क्योंकि हमारा जो समाज है वह बाइनरी सिस्टम पर चलता था और आज भी ज्यादातर लोग उसी बाइनरी सिस्टम को ज्यादा अच्छे से समझ पाते हैं। इसमें जेंडर और सेक्स दोनों अलग–अलग चीजें हैं। सेक्स यानी हमारी शारीरिक संरचना, जिसके साथ आप पैदा हुए हैं। अगर लड़का पैदा हुआ है तो उसकी शारीरिक संरचना ऐसी है जिससे मां–बाप समझ जाते हैं कि यह लड़का है और शारीरिक संरचना को देख कर समझ जाते हैं कि यह लड़की है। लेकिन उसको हम कहते हैं सेक्स, मेल और फीमेल हो गए, लेकिन हमारे समाज ने कुछ जेंडर नियम बना रखें हैं। ये कहीं पर लिखे हुए नहीं हैं। ये अलिखी कुछ चीजें हैं कि अगर लड़का हुआ तो नीले रंग के गुब्बारों की सजावट हो। कमरे में नीला रंग हम पेंट करेंगे या उसके लिए जो भी चीजें लाएंगे वह नीले रंग की लाएंगे। वहीं लड़की हुई तो गुलाबी रंग। लेकिन समाज जो सेक्स के साथ कुछ चीजें जोड़ देता है कि यह ऐसे ही होगा। वहां पर जेंडर आ जाता है। लड़का है तो वह क्रिकेट ही खेलेगा। लड़की है तो वह किचन सेट से खेलेगी। इस तरह कुछ नियम तय कर दिए गए हैं तो वहां पर जेंडर आ जाता है। इससे वह व्यक्ति अपने आपको असोसिएट करने लगता है, जो सोशल नॉर्म्स उसको बता रहे हैं कि तुम लड़के हो और तुम्हें ऐसा ही महसूस करना है। तुम नेल पॉलिश नहीं लगा सकते। तुम स्कर्ट नहीं पहन सकते, पर उसका मन करता है कि मैं नेल पॉलिश भी लगाऊं। लेकिन समाज उसको वह इजाजत नहीं देता। इस जेंडर नॉर्म्स के साथ वह अपने आपको आईडेंटिफाई नहीं कर पा रहा है।

जैसा कि आपने बताया कि समाज में अनेक जेंडर रोल और स्टीरियो टाइप्स हैं तो अगर इन बैरियर को हम दूर करना चाहें तो समाज में उन्हें कैसे दूर कर सकते हैं?

आपने पहले सवाल में जेंडर सेंसिटिविटी और जेंडर सेंसटाइजेशन के बारे में पूछा था। लंबे अरसे तक जेंडर और सेक्स का फर्क बहुत लोग नहीं समझते थे। आज भी नहीं समझते हैं। पहले तो और भी कम प्रतिशत में लोग समझ पाते थे, लेकिन अब धीरे–धीरे इस बारे में जागरूकता बढ़नी शुरू हुई है मीडिया की वजह से। आज आप इस तरह के कार्यक्रम देखते हैं। ओटीटी प्लेटफॉर्म पर कुछ सीरीज देखते हैं, जिसमें आप कहीं न कहीं एक जागरूकता आपके अंदर आ रही है जेंडर को लेकर। वह जेंडर सेंसिटिविटी है और जागरूक होने की जो प्रक्रिया है, वह जेंडर सेंसटाइजेशन है। अब यहां पर एक बात समझना जरूरी हो जाता है कि जेंडर इक्वलिटी क्या है। इसका जवाब है कि दोनों जेंडर को बराबर सुविधाएं मिलें। उसको हम जेंडर इक्वलिटी कहते हैं। समाज हमेशा लड़का या लड़की के पैदा होते ही उसके जेंडर रोल्स निर्धारित कर देता है। लड़की है तो वह बचपन से क्या खेलेगी। इस तरह की चीजें बचपन से उसके दिमाग में भर जाती हैं। यह जेंडर स्टेरियो टाइप है क्योंकि जेंडर रोल्स इस तरह से डिफाइन कर दिए गए कि आदमी नौकरी पर जाएगा। नौकरी पर जाने से पहले सुबह वह उठेगा। आराम से तैयार होगा। यहां पर पत्नी सुबह–सुबह उठकर बच्चों को स्कूल भेजेगी। टिफिन तैयार करेगी। उनको दफ्तर भेजेगी। वह सारी व्यवस्था जो घर के अंदर है वह सारी स्टीरियो टाइप है, जिनको तोड़ने की जरूरत है। मसलन–पति घर में अगर काम करा रहा है तो पति बहुत खुशी से बोलता है। अरे मैं तो अपनी वाइफ को बहुत हेल्प करता हूं। उसने उस पर एहसान जता दिया है, लेकिन असल में भावना क्या होनी चाहिए कि 'एम शेयरिंग द लोड'। यह जो जिम्मेदारियां हम दोनों की हैं और अगर आधी तुम कर रही हो तो आधी जिम्मेदारियां मैं निभाऊंगा। वह भावना होनी चाहिए। यह भी एक बड़ा जेंडर स्टेरियो टाइप है

आपने बताया कि स्टेरियो टाइप आज भी हमारे समाज में चल रहे हैं। भले आज हम 21वीं शताब्दी में जी रहे हैं, लेकिन हमें आज लिंग संवेदीकरण जैसे विषय पर काम करने की क्या जरूरत है?

यह पुरानी समस्या है कि जेंडर को लेकर रोल बांट दिए गए और मुझे लगता है कि जिम्मेदारियों को बांटना गलत नहीं था लेकिन उस व्यवस्था का जब गलत लाभ उठाया जाने लगा वहां पर सारी गड़बड़ हो गई। संतुलन खराब हो गया क्योंकि महिला कमा नहीं रही। वह पैसा लेकर नहीं आ रही है घर में तो उसे गलत तरीके से देखा जाने लगा। वह हीन भावना से ग्रसित रहने लगी, क्योंकि उसको हर चीज के लिए अपने पति के ऊपर निर्भर रहना पड़ता था। हर चीज तो पैसे से आयेगी और पैसा पति के पास है। जब तक उसकी शादी नहीं होती। वह अपने पिता पर निर्भर है। फिर वह पति पर निर्भर है। फिर जब वृद्धावस्था आई जब पति नहीं कमा रहा है तो वह पुत्र पर निर्भर है तो उसकी निर्भरता का लाभ पुरुष ने उठाया। हमेशा ही उसे दबाकर रखा। उसे उसके अधिकार नहीं दिए। उसको वह सम्मान नहीं मिला, जिसकी वह अधिकारी थी, जो वह घर में कान्ट्रीब्यूट कर रही थी। घर की पूरी व्यवस्था को संभाल रही थी। उसे कभी भी पैसे के उस पर नहीं आंका गया। वह तो ठीक है कि घर का काम कर रही है। इसमें क्या है, लेकिन उसका भी कुछ महत्व है। कुछ अहमियत है। अगर उसको उस नजरिया से देखा जाए। पैसे के उस पर आंका जाए तब भी उसका मूल्य बनता है तो उस तरह से उसे कभी नहीं। उसको देखा गया कि यह तो कुछ कमा नहीं रही है। वह जो एक भाव हमेशा से रहा महिलाओं के लिए और उसकी वजह से उन्हें जो दबा कर रखा गया। उनको विशेष सम्मान नहीं दिया गया। उसकी वजह से असंतुलन पैदा हो गया। इसलिए आज बहुत जरूरी हो गया कि इस बारे में संवाद हो। इस बारे में जागरूकता हो और इस विषय पर काम किया जाए।

आप एक एनजीओ के साथ भी जुड़ी हुई हैं, जो जेंडर सेंस्टाइजेशन के ऊपर काम कर रही है। यह संस्था इन बिन्दुओं पर किस तरह से काम कर रही है?

हमारी एनजीओ का नाम समर्थ इंडिया फाउंडेशन है। मैं उसकी चेयर पर्सन हूं। यह विषय मेरे दिल के बहुत करीब है। इस पर मैंने काफी अरसे तक काम किया। कई सारे वर्कशॉप मैंने आयोजित की। इस वजह से हमने उसको अपना बड़ा लक्ष्य बनाया है कि हमें जेंडर सेंसिटाइजेशन करनी है। इसके लिए हम अलग–अलग जगहों पर संस्थाओं, शिक्षण संस्थान, सरकारी दफ्तर आदि जहां से भी हमें बुलाया जाता है हम उन्हें कांटेक्ट करते हैं। हम वहां पर कार्यशाला आयोजित करते हैं। लोगों को जागरूक करने का प्रयास करते हैं।

दिल्ली विश्वविद्यालय के हर कॉलेज में एक सोसा. इटी बनाई जाती है, जो लिंग संवेदीकरण के ऊपर काम करती है। अगर उस सोसाइटी में काम करना चाहें तो हम किस तरीके से समाज में जागरूकता फैला सकते हैं?

इसके लिए आप लोग कार्यशालाएं आयोजित कर सकते हैं। हम लोग जो वर्कशॉप रखते हैं जैसे कि कोई छोटी सी स्किट करने के लिए आपने ग्रुप बना दिया। लोगों को आप एकत्रित करेंगे। उनको एक सिचुएशन दे दीजिए। कैसे होना चाहिए और कैसे नहीं होना चाहिए। जैसे आपके कॉलेज की बात की जाए तो यहां मिलकर लोग यह काम कर रहे हैं। जागरूक कर रहे हैं। इस बारे में यह परिवार तक पहुंचना चाहिए। जब एक व्यक्ति जागरूक होगा। वह परिवार में जाकर इस बारे में बात करेगा। परिवार में परिवर्तन लाने की कोशिश करेगा। व्यवहार में हमारा समाज भी धीरे–धीरे बदलना शुरू हो जाएगा।

आप हमारे श्रोताओं को जेंडर सेंसटाइजेशन के ऊपर क्या संदेश देना चाहेंगी?

अब सिर्फ यह कहना चाहती हूं कि जो हमारे समाज में वर्षों से होता आ रहा है वह सही हो यह जरूरी नहीं है। कृपया प्रश्न करें। सोचें अपने दिमाग में और इन चीजों को बदलने का प्रयास करें। हर बदलाव जो आता है वह हमारे अंदर से आता है तो हमें खुद को बदलना होगा। महिलाएं ताड़ना की अधिकारी नहीं है। वह सम्मान की अधिकारी हैं। इसलिए हमें उस तरफ काम करना है, लेकिन जेंडर इक्वलिटी सिर्फ महिलाओं के अधिकारों के लिए लड़ना नहीं होता। हम लोग भी जो अपनी एनजीओ में काम कर रहे हैं वह हम दोनों जेंडर के लिए काम कर रहे हैं, क्योंकि ऐसा नहीं है कि पुरुषों के लिए कोई दिक्कतें नहीं हैं। हमें वह संतुलन लाना है। जो भारी था पलड़ा वह हल्का हो गया और जो हल्का था वह और भारी। ऐसे में वह फिर से संतुलित हो गया तो फिर एक नई जद्दोजहद, एक नया संघर्ष आरंभ हो जाएगा। इसीलिए संतुलन लाने की आवश्यकता है कि दोनों जेंडर जो हैं उनमें एक संतुलन हो। समानता हो और मिलकर वह समाज को आगे बढ़ाएं। जो यूएन ने एसडीजी गोल्स दिए हैं एसडीजी सिक्स्टीन गोल्स, उसमें भी तीन गोल्स में आपको जेंडर इक्वलिटी की बात मिलेगी। समाज में कोई भी परिवर्तन आप लाना चाहते हैं। सकारात्मक परिवर्तन तो उसमें दोनों जेंडर के अपने बहुत एहम रोल हैं। इसीलिए दोनों जेंडर में समानता की बहुत जरूरत है।

एक आम नागरिक के तौर पर हम बात करें तो हम अपने आस–पास या समाज में बदलवा लाना चाहते हैं जेंडर इक्वालिटी को लेकर। उसके लिए हम कैसे काम कर सकते हैं?

एक आम नागरिक के तौर पर सबसे पहली जरूरत समझने की है कि जेंडर रोल क्या है। जेंडर स्टीरियो टाइप क्या है और हमारे जीवन में वह कहां पर हैं। परिवारों में जहां पति पत्नी को मारता है, बच्चा बचपन से देख रहा है कि मां कुछ भी कहती है तो पिता सबके सामने भी उसे डांट देते हैं तो उसे लगता है कि महिलाओं का एक निचला स्तर है। वह उनको एक निम्न स्तरीय व्यक्ति के रूप में देखने लगता है। आगे वह भी किसी महिला से इसी प्रकार से बात करेगा। उसकी सोच होगी कि मैं महिलाओं से किसी भी तरह से बात कर सकता हूं। क्योंकि यह एक महिला है। यह स्टेरियो टाइप्स हैं। यह मूल कारण बनते हैं। हमारा समाज पुरुष सत्तात्मक रहा है। जब लड़का पैदा होता है परिवार में। बड़ा होकर वह इस तरह की चीजें देखता है। उसको लगता है कि हां मैं बेहतर हूं। मैं अपने जेंडर की वजह से बेहतर हूं। फिर वह सेक्सुअल एब्यूज करने लगता है। इन्हीं सब चीजों में बदलाव लाना जरूरी है।

यात्रा करते समय हर चीज पर गौर करें

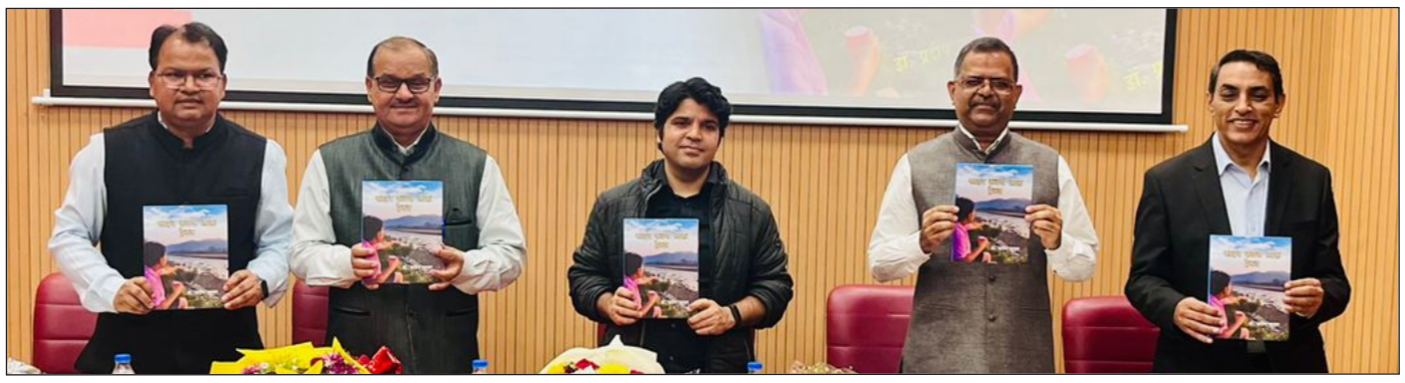

पत्रकारिता विभाग के शिक्षक डॉ. प्रदीप कुमार की किताब का विमोचन लेखक उमेश पंत, प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता आदि शिक्षकों ने किया।

आस्था

नई दिल्ली। यात्रा में होना दरअसल अपना पहना हुआ उतार कर दुनिया का उतरा हुआ पहन लेना है। यह बात लेखक उमेश पंत ने हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग और सामुदायिक रेडियो तरंग 90.0 एफएम के सहयोग से 30 नवंबर को हुई 'ट्रैवल जर्नलिज्म' विषयक कार्यशाला में कही। राम लाल आनंद महाविद्यालय में आयोजित कार्यशाला चार चरणों में हुई, जिसमें प्रथम चरण में फोटो प्रदर्शनी शामिल थी।

इसमें शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की खींची गई बेहतरीन तस्वीरों को रखा गया। दूसरे चरण में विभाग के शिक्षक डॉ. प्रदीप कुमार के यात्रा वृत्तान्त 'फाइव कलर्स आफ ट्रैवल' का विमोचन हुआ। इसमें लेखक सहित विभाग के संयोजक प्रो. राकेश कुमार, उपप्राचार्य प्रो. सुभाष चन्द्र डबास ने हिस्सा लिया। तृतीय चरण में मुख्य वक्ता उमेश पंत ने विद्यार्थियों का 'ट्रैवल जर्नलिज्म' के बारे में बताया।

उमेश पंत 'दूर दुर्गम दूरस्थ' पुस्तक के लेखक हैं। समाचार पत्र हिंदुस्तान टाइम्स, नवभारत टाइम्स, दैनिक भास्कर जैसे बड़े समाचार पत्रों में ट्रैवल पर लिखते रहते हैं। उन्होंने विद्यार्थियों को ट्रैवल जर्नलिज्म में आने के पायदान, शैली के साथ आय के स्रोतों के बारे में विस्तार से समझाया। ट्रैवल जर्नलिज्म में किस प्रकार करियर बनाया जा सकता है? यात्रा करते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए, जैसे मुद्दों पर चर्चा की।

उमेश पंत ने कृष्णनाथ, अनिल कुमार, राहुल सांकृत्यायन आदि लेखकों को पढ़ने और उनके लिखने की विधा सीखने के लिए प्रेरित किया। यात्री और पर्यटक में अंतर समझना ही इनके वक्तव्य का आधार बिंदु था। वक्तव्य के बाद प्रश्नोत्तरी सत्र रखा गया, जिसमें विद्यार्थियों ने अपने प्रश्नों को रखा। अंतिम चरण में फिल्म स्क्रीनिंग की गई, जिसमें हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के विद्यार्थियों की इंटरनेशनल अवार्ड प्राप्त डॉक्यूमेंट्री 'चाय चाय' का प्रदर्शन हुआ। यह डॉक्यूमेंट्री डॉ. प्रदीप कुमार के निर्देशन में मीनाक्षी पंत, विकास यादव, निशा मिश्रा, महक व उनकी टीम ने बनाई थी।

कार्यक्रम में महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता, विभाग के संयोजक प्रो. राकेश कुमार, कार्यशाला संयोजक डॉ. प्रदीप कुमार, डॉ. निशा, डॉ. सीमा झा सहित अनेक शिक्षक मौजूद रहे। अंत में संयोजक प्रो. राकेश कुमार ने सभी का धन्यवाद किया।

आरएलए : नेताओं के रूप में दिखे विद्यार्थी

संजीव राज

नई दिल्ली। संसद को लोकतंत्र का मंदिर कहा जाता है, क्योंकि लोकतंत्र में संसद का वही स्थान है जो धार्मिक मामलों में ईश्वरीय शक्ति को है। इन्हीं पक्तियों के साथ संचालक ने युवा संसद प्रबोधन कार्यक्रम की शुरुआत की। यह कार्यक्रम 4 दिसंबर 2023 को राम लाल आनंद महाविद्यालय की वाद विवाद समिति आरोह की ओर से आयोजित किया गया। इसमें दिल्ली विश्वविद्यालय के छात्र एवं छात्राओं ने भाग लिया।

निर्णायक मंडल के रूप में सभापति मनस्वी बांगड़ एवं उपसभापति हिमांशु कुमार मौजूद रहे। सदन का विषय 'न्याय संहिता बिल 2023' था। सभी प्रतिभागियों ने अलग अलग नेताओं के रूप में अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। कार्यक्रम दो चरण में हुआ।

प्रथम चरण में सभी प्रतिभागियों ने सामान्य भाषण सत्र में अपने विचारों को प्रस्तुत किया और न्याय संहिता बिल 2023 पर अपनी स्थिति को स्पष्ट किया। दूसरे चरण में कार्यकारी बोर्ड की ओर से प्रतिभागियों को संकट की स्थिति में डाला गया। इस चरण के माध्यम से उनकी राजनीतिक समझ एवं संकट से उभरने की कला को देखा गया। इसमें जहां कुछ प्रतिभागियों ने युद्ध का माध्यम चुना वहीं कुछ प्रतिभागियों ने शांति के जरिए संकट का समाधान ढूंढा। असदुद्दीन ओवैसी की भूमिका निभा रहे आत्माराम सनातन धर्म कॉलेज के छात्र आदित्य वाधवा को संसद प्रबोधन के सर्वश्रेष्ठ प्रतिनिधि के रूप में चुना गया।

उच्च प्रशंसा पुरस्कार के लिए पीजीडीएवी के छात्र दिव्य प्रताप एवं विशेष उल्लेखनीय पुरस्कार राम लाल आनंद महाविद्यालय के छात्र वंश बत्रा एवं गुरु तेग बहादुर खालसा कॉलेज के छात्र अंश को मिला। सर्वश्रेष्ठ पत्रकार का पुरस्कार राम लाल आनंद कॉलेज की छात्रा दिव्या सीकरी को मिला। विजेताओं को ट्रॉफी एवं प्रमाणपत्र से सम्मानित किया गया।

अच्छा लिखने के लिए अच्छा पढ़ना जरूरी है

निशा मिश्रा

नई दिल्ली। आप जो कुछ लिखें उसे मिटाए नहीं, यह कथन अभिव्यक्ति इंग्लिश क्रिएटिव राइटिंग सोसाइटी की ओर से आयोजित कार्यशाला में मुख्य अतिथि डॉ. नंदिनी सेन का है राम लाल आनंद महाविद्यालय में 4 दिसम्बर 2023 को अभिव्यक्ति और यूबिक्विटस इंग्लिश लिटरेसी सोसा. इटी के सहयोग से 'क्विल टू क्वेरी : नेवीगेटिंग पब्लिशिंग वाटर्स' विषयक एक दिवसीय कार्यशाला का उद्देश्य भावी लेखकों का सही दिशा में मार्गदर्शन करना था।

मुख्य वक्ता के तौर पर मौजूद भारती कॉलेज की शिक्षिका डॉ. नंदिनी ने अपने वक्तव्य में विद्यार्थियों को पब्लिशिंग प्रक्रिया की जानकारी दी। साथ ही अपने निजी अनुभवों को विद्यार्थियों से सांझा किया। नंदिनी ने अपनी एक पुस्तक 'द सेकंड वाइफ' का विवरण देते हुए समाज में महिलाओं की स्थिति पर प्रकाश डाला। साथ ही एक जीवंत घटना को किस प्रकार लिखा जा सकता है, इसकी जानकारी दी। अगली कड़ी में संपादक पलोमा दत्ता ने पब्लिशिंग प्रक्रिया से जुड़े अपने अनुभव व अब तक के अपने सफर को संक्षेप में बताया। उन्होंने कहा कि अन्य किताबों की अपेक्षा कल्पना आधारित पुस्तकें आज बाजार में ज्यादा जगह बना रही हैं। दोनों वक्ताओं ने विद्यार्थियों को भविष्य में अच्छे लेख व किताबें लिखने की प्रेरणा दी। साथ ही यह हिदायत दी कि अच्छा लिखने के लिए अच्छा पढ़ने की भी आवश्यकता है। इसके साथ ही पब्लिशिंग प्रक्रिया से जुड़ी लेखन से लेकर प्रकाशन तक की पूरी प्रक्रिया को समझाने का प्रयास किया। अंत में विद्यार्थियों ने संबंधित वक्ता से सवाल–जवाब किए।

समय की मांग है, भूजल प्रबंधन और संरक्षण

जया सिंह

नई दिल्ली। जल ही जीवन है। जल जीवन की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। इसी आवश्यकता को युवाओं को समझाने के लिए भारत सरकार के जल शक्ति मंत्रालय की ओर से राम लाल आनंद महाविद्यालय के भूविज्ञान विभाग के सहयोग से प्रशिक्षण का आयोजन किया गया।

इसका उद्देश्य युवाओं को भूजल प्रबंधन के लिए वर्षा जल संचय के महत्व को समझाना था। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में केंद्रीय भूमि जल प्राधिकरण के सदस्य टी.बी.एन. सिंह रहे। वहीं डॉ. डी. चक्रवर्ती, डॉ. कीर्ति मिश्रा, ज्ञानेंद्र राय आदि विशेषज्ञों ने भूजल संरक्षण पर व्याख्यान दिए। वक्ताओं ने मुख्य तौर पर अपने वक्तव्य में दिल्ली में भूजल की स्थिति, विश्व में भूजल की स्थिति के बारे में व भूजल प्रबंधन न करने से होने वाले बुरे परिणाम को युवाओं को विस्तार से समझाया। साथ में यह भी बताया कि यदि वह जल संचय करने का प्रयास नहीं करेंगे तो आने वाली पीढ़ी को जल की कमी जैसी गंभीर समस्याओं से गुजरना पड़ेगा। जल संचय करने के क्या फायदे हैं? किस प्रकार से जल संचय करना चाहिए, इन तमाम मुद्दों पर युवाओं से विस्तार से बात की।

इस दौरान महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता व कार्यक्रम शिक्षक प्रभारी डॉ सरबरी नाग मौजूद रहीं। अंत में एक फीडबैक सत्र रखा गया, जिसमें विद्यार्थियों ने जल संचय को लेकर अपना पक्ष रखा और अपने प्रश्नों को वैज्ञानिकों से साझा किया। विशेषज्ञों ने भी विद्यार्थियों के प्रश्नों का विस्तार के साथ उत्तर दिया। कार्यक्रम में भाग लेने वाले सभी विद्यार्थियों को सर्टिफिकेट देकर समापन किया गया।

प्रतिबंधित साहित्य और पत्रकारिता पर प्रदर्शनी

कैम्पस संवाददाता

नई दिल्ली। 'समन्वय 2023' में प्रति. बंधित साहित्य, समाचार पत्र और पत्रिकाओं की प्रदर्शनी भी लगाई गई। यह वह सामग्री है जिसे अंग्रेजी हुकूमत के समय जब्त कर लिया गया था। प्रकाशित करने से रोका गया था अथवा प्रकाशित कर पाठकों तक पहुंचाने में रोड़े अटकाए गए थे। वैसे तो यह दुर्लभ सामग्री सभी पढ़ने–लिखने वालों के लिए उपयोगी है, लेकिन साहित्य और पत्रकारिता से जुड़े लोगों के लिए तो इसका खास मायने है। यह सामग्री स्कैन करके प्रदर्शित की गई थी। सीएसडीएस दिल्ली और हैदराबाद विश्वविद्यालय संयुक्त रूप से पिछले कुछ वर्षों से प्रतिबंधित साहित्य और पत्रकारिता से जुड़ी सामग्री का संकलन कर रहा है। समन्वय में लगी प्रदर्शनी उसी काम का हिस्सा है। प्रदर्शनी में कानपुर से निकलने वाली प्रभा पत्रिका पर खास सामग्री निहारने को मिली। वहां पहुंचे लोग साप्ताहिक पत्र स्वदेश की भूमिका से भी परिचित हुए। भविष्य अखबार के कई अंक और पृष्ठ देखने से उसकी धारदार पत्रिका का अंदाजा लगा। विश्वमित्र और चांद पत्रिका की सामग्री अंग्रेजों को क्यों चुभती थी, उसका मजमून भी प्रदर्शनी से पता चला। शंकर के कार्टूनों की पूरी सीरीज भी यहां मौजूद थी। इस काम में लगी दोनों संस्थाएं किस उद्देश्य से यह काम कर रही हैं, उसमें किस तरह की परेशानी आ रही है, इस संकलन में नागरिक और बौद्धिक समाज किस तरह सहयोग कर सकता है, ऐसे अनेक बिन्दुओं पर गोष्ठी भी आयोजित की गई। इसमें इस काम में लगे दोनों संस्थाओं के प्रतिनिधियों और विशेषज्ञों ने अपनी बात रखी।

समन्वय 2023 : भारतीय भाषाओं का जलसा

तीन दिवसीय समारोह में अनेक वैचारिक सत्र हुए,पत्रकारिता से जुड़े लोगों के लिए खास सामग्री

पवन कुमार

नई दिल्ली। इंडिया हैबिटेट सेंटर में तीन दिवसीय 'समन्वय 2023 : भारतीय भाषाओं का जलसा' समारोह आयोजित किया गया। 24 से 26 नवम्बर तक चले समारोह में अनेक वैचारिक सत्र हुए तो हर दिन की अंतिम प्रस्तुति में अलग–अलग जगहों की लोक संस्कृति देखने को मिली। उद्घाटन सत्र से लेकर पहले दिन के सभी सत्र खाना–खजाना पर केन्द्रित थे। दूसरा दिन शास्त्रीय संगीत और अनुवाद पर था। इस दिन कई बेहतरीन वैचारिक सत्र हुए। इसमें इतिहास, आदिवासियत : पहचान और साहित्य सहित मीडिया से जुड़े 'डिजिटल फ्यूचर : स्क्रिप्ट, फॉण्ट, टेक्सट, आर्काइव्स' विषय पर रोचक सूचनाएं जानने को मिलीं।

- **फॉण्ट की विकास यात्रा सहित डिजिटल फ्यूचर के बारे में बताया गया**
- **पहाड़ और नदियों पर किताब लिखने वाले विशेषज्ञों ने दी रोचक जानकारी**

मीडिया से जुड़े इस विषय पर राजीव प्रकाश ने बताया कि इतिहास में लोगों ने हमें चित्रों के माध्यम से भाषा और फॉण्ट के बारे में बताया। भाषण के माध्यम से बताया। कम्प्यूटर के आने के बाद हम नए–नए फॉण्ट का विकास कर रहे हैं। भाषा कोई नई चीज नहीं है। भाषा बड़ी प्राचीन है। भाषा किस तरह विकसित हुई, किस रूप में विकसित हुई, यह जानना मुश्किल है। पर, भाषा इतनी सरल एवं सहज है कि उसे हर व्यक्ति बोल सकता है।

असीम घोष ने कहा कि वर्तमान समय में हिंदी भाषा को डिजिटल क्षेत्र में और अधिक लाने की जरूरत है। हमने देखा है कि किस तरह हिंदी भाषा पिछड़ती जा रही है और हिंदी की जगह अंग्रेजी भाषा लेती जा रही है। हमने कई ऐसे गेम बनाए हैं जो हिंदी भाषा को बढ़ाने में अहम भूमिका निभाएंगे। नितिन सिंह ने बताया कि किस तरह उन्होंने उर्दू भाषा की पुस्तकों को डिजिटल किया है। अभी यह कार्य जारी है। पुरानी पुस्तकें खराब होने की तरफ जा रही हैं। उन्हें डिजिटल किया जा रहा है। ऐसा करने से उनमें लिखी जानकारी और प्राचीन धरोहर को बचाया जा सकेगा। इस सत्र का संचालन लेखक रविकांत ने किया, जिन्होंने सिनेमा और रेडियो की भाषा पर महत्वपूर्ण काम किया है।

तीसरे दिन का एक महत्वपूर्ण सत्र नदियों और पहाड़ पर केन्द्रित था, जिसमें ब्रह्मपुत्र पर किताब लिखने वाले पत्रकार सम्राट चौधरी और हिमालय की यात्रा करने वाले और दर्रा दर्रा हिमालय एवं दरकते हिमाचल जैसी किताबें लिखने वाले लेखक अजय सोडानी विशेषज्ञ के रूप में अपनी बात रखी तो मीडिया अध्येता और लेखक विनीत कुमार ने अपने सवालों और टिप्पणियों से इस सत्र को रोचक बना दिया। इस तीन दिनी जलसे की उपलब्धि दूसरे दिन के अंतिम सत्र में हुआ जोगथी नृत्य रहा। इस प्रस्तुति के लिए पद्मश्री मांजम्मा जोगथी अपनी टीम के साथ गजब प्रस्तुति दी। उसे देखने के लिए श्रोता भी जमे रहे। इसका जिक्र भी जोगथी ने किया कि तमाम जगहों पर हम प्रस्तुति देते हैं, लेकिन ऐसे श्रोता नहीं देखे जो हमारी भाषा न जानते हुए उसे समझने की कोशिश करते नजर आए।

इंडिया हैबिटेट सेंटर में लगी प्रदर्शनी में 'भविष्य' पत्र पर खास सामग्री।

सेतु पांडुलिपि पुरस्कार से सम्मानित किए गए कथाकार राजू शर्मा, निर्णायकों ने किया 'मतिभ्रम' उपन्यास का चयन

हर कोई मतिभ्रम का शिकार है, पर लेखक नहीं

त्रिवेणी सभागार में कथाकार राजू शर्मा को अमिता पाण्डेय, कथाकार अखिलेश, मदन कश्यप, रवीन्द्र त्रिपाठी, संजीव व अमिताभ राय ने सम्मानित किया।

आस्था त्रिपाठी

नई दिल्ली। उपन्यासकार ने हकीकत को हकीकत की तरह लिखने का साहस दिखाया है। किसान आत्महत्या से लेकर सत्ता की साजिशें लिखने का साहस हर किसी में नहीं है। उपन्यासकार प्रशासन में बड़े ओहदे पर रहा है, ऐसे में शासन सत्ता की ओर से किए जा रहे खेल को वह बखूबी जानता है। उपन्यास के पात्र सभी मतिभ्रम का शिकार हैं, लेकिन लेखक खुद मतिभ्रम का शिकार नहीं है। ये बातें 6 दिसम्बर 2023 को सेतु पांडुलिपि से पुरस्कार से सम्मानित उपन्यासकार राजू शर्मा के उपन्यास 'मतिभ्रम' पर बात करते हुए लेखकों ने कही।

त्रिवेणी सभागार में 'मतिभ्रम' उपन्यास पर चर्चा की शुरुआत करते हुए आलोचक संजीव कुमार ने कहा कि राजू शर्मा हिंदी की दुनिया में अलग तरह के कहानीकार और उपन्यासकार हैं। लेखक के कथ्य की तारीफ करते हुए उन्होंने कहा कि हकीकत को हकीकत की तरह लिखने का साहस राजू शर्मा रखते हैं परंतु उनकी भाषा हिंदी की रवां कथा भाषा नहीं है। साथ ही कुछ दोहराव से बचा जा सकता था। कवि मदन कश्यप का कहना था कि यदि दोहराव सृजनात्मक तरीके से है तो उसका संपादन सही नहीं है। कथाकार और 'तद्भव' के संपादक अखिलेश ने कहा कि किसान आत्महत्याएं यथार्थ व सत्ता के बारे में राजू शर्मा की तरह लिखने का साहस हर किसी में नहीं है। कथाकार की दृष्टि गुणगान करने की नहीं बल्कि प्रश्न करने की होती है। रवीन्द्र त्रिपाठी 'मतिभ्रम' उपन्यास में आए डिस्टोपिया का विश्लेषण करते हुए उसमें शामिल आख्यानों की प्रशंसा की। वरिष्ठ लेखिका ममता कालिया ने राजू शर्मा को बधाई देते हुए सेतु प्रकाशन को अच्छी पांडुलिपि का चयन करने के लिए बधाई दी। उन्होंने कहा कि 'मतिभ्रम' में तंत्र कैसे दमन करता है, जैसे मुश्किल विषय का चयन करने और उसका निर्वाह करने के लिए लेखक को बधाई दी जानी चाहिए।

लेखकीय टिप्पणी करते हुए राजू शर्मा ने कहा कि सभी वक्ताओं ने मेरी मुख्य बातें छीन ली हैं, फिर भी मैं कुछ कहूंगा। उन्होंने 'मतिभ्रम' पर की गई टिप्पणियों के लिए वक्ताओं का धन्यवाद दिया। साथ ही राजनीति, प्रशासन तंत्र की खामियों और उनका उपन्यास में किए गए इस्तेमाल पर बात की। इससे पहले सभी मंचासीन लेखकों ने 'मतिभ्रम' के लेखक राजू शर्मा को शॉल ओढ़ाकर, स्मृति चिन्ह और पुरस्कार राशि का चेक देकर सम्मानित किया। शोभा अक्षरा ने अपनी चुटीली टिप्पणियों से संचालन को जीवंत बनाया तो सेतु की प्रबंधक अमिता पाण्डेय ने प्रकाशन की पांच साल की यात्रा पर प्रकाश डाला। शुरुआत में सेतु प्रकाशन के अमिताभ राय ने लोगों का स्वागत करते हुए ऐलान किया कि प्रकाशन समूह अपने लाभ का 50 प्रतिशत बालिका शिक्षा के लिए अर्पित करेगा। साहित्यकारों के हित के लिए एक कमेटी का गठन करेगा, जिसकी जिम्मेदारी वरिष्ठ कवि और लेखक अशोक बाजपेयी को सौंपी जाएगी।

महात्मा गांधी अपनी अक्षर देह में जीवित हैं : कुमार प्रशान्त

इससे पहले सेतु और वाग्देवी व्याख्यानमाला के तहत गांधीवादी विचारक कुमार प्रशान्त ने 'गांधी की अक्षर देह' विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा कि गांधी के अक्षर गहरी चुनौती देते हैं। बिना अपमान या अवहेलना के चाकू की तरह काटते हैं। उन्होंने गांधी की अक्षर देह पर बात करते हुए कहा कि अक्षरों का रिश्ता गांधी के साथ ऐसा नहीं है जैसा अन्य कवियों और लेखकों का है। अक्षर वह शास्त्र है जो तब काम आते हैं जब हम निःशस्त्र हो जाते हैं। गांधी अपनी अक्षर देह में जीवित हैं। गांधी कहते हैं कि मैं कब्र से भी बोलता हूं। उन्होंने बताया कि कैसे सत्य के साथ जुड़कर शब्द बहुत ही शक्तिशाली हो जाते हैं।

आरएलए में परीक्षा की तैयारी में जुटे विद्यार्थी

निशा मिश्रा

नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय से जुड़े महाविद्यालयों में इस समय परीक्षा का माहौल है। सत्र के पहले सेमेस्टर की कक्षाएं 12 दिसम्बर को समाप्त हो चुकी हैं। इसके अगले दिन से विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रायोगिक परीक्षाएं हो रही हैं। इसी के साथ सभी परीक्षार्थियों में परीक्षा को लेकर एक तरफ जोश है तो दूसरी ओर चिंता भी दिख रही है।

विद्यार्थियों को परीक्षा की तैयारी के लिए फिलहाल दैनिक कक्षाओं से निजात मिल गई है। दिसम्बर के पहले सप्ताह से आंतरिक मूल्यांकन के लिए प्रैक्टिकल की प्रक्रिया शुरू कर दी गई थी। प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों के प्रैक्टिकल 9 दिसंबर से शुरू होकर 18 दिसंबर तक चले। इसी के साथ द्वितीय वर्ष की प्रायोगिक परीक्षाएं 10 दिसंबर से शुरू होकर 16 दिसंबर तक चलीं। विद्यार्थियों की थ्योरी की परीक्षाएं 20 दिसंबर से शुरू होंगी। ये परीक्षाएं आगामी 17 जनवरी 2024 को समाप्त होंगी। परीक्षाओं को सुचारु रूप से संचालित करने के लिए संबंधित महाविद्यालयों में तैयारियां पूरी कर ली गई हैं।

जातीय जनगणना कराने पर विशेषज्ञ ने दिया जोर

पवन कुमार

- **जातीय जनगणना : आवश्यकता और चिंता विषय पर कार्यक्रम का आयोजन**
- **सामाजिक न्याय से दूर तबके को न्याय और समानता मिल सकेगी : हरीश**

नई दिल्ली। इस समय देश में जाति आधारित जनगणना की गूंज सुनाई दे रही है। ऐसे में बिहार पहला ऐसा राज्य बनकर सामने आया, जिसने जाति आधारित जनगणना कराई है। जातीय जनगणना की आवश्यकता व चिंता पर विद्यार्थियों से चर्चा करने के लिए राम लाल आनंद महाविद्यालय के फूले पेरियार अंबेडकर स्टडी सर्किल ने 7 दिसंबर 2023 को कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसका विषय 'जातीय जनगणना आवश्यकता और चिंता' था। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के असिस्टेंट प्रोफेसर हरीश एस. वानखेड़े मौजूद रहे।

हरीश वानखेड़े ने बताया कि किस तरह जाति, धर्म व वर्ग के आधार पर सामाजिक भेदभाव हुआ है। पहले जाति आधारित जनगणना 1901 में हुई थी। उस समय ब्रिटिश इंडिया का शासन था। 1947 में देश आजाद हुआ। उसी समय अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति की बात की गई थी।

वर्तमान समय में बिहार में जातीय आधारित जनगणना हुई है और यह कहीं न कहीं सही भी है, लेकिन इसमें कई राजनीतिक दल भी अपने आप को प्रदर्शित कर रहे हैं, जो पिछड़ा वर्ग है उसमें भी एक अति पिछड़ा वर्ग आता है, जो सामाजिक न्याय से अभी दूर नजर आ रहा है। इसलिए जाति आधारित जनगणना होनी चाहिए, जिससे सभी को सामाजिक न्याय एवं समानता मिल सके और सभी मुख्य धारा में आ सकें। जातीय जनगणना से जुड़े ऐसे ही अनेक बिन्दु विशेषज्ञ ने लोगों से साझा किए। कार्यक्रम में समिति के संयोजक प्रो. राजीव कुमार के साथ सह संयोजिका डॉ. शालिनी स्वामी मौजूद रहीं।

दियों का सजा कर मनाई दीपावली

स्मृति

नई दिल्ली। राम लाल आनंद महाविद्यालय में दीयों को रंग–बिरंगा सजा कर दीपावली का त्योहार मनाया गया। कॉलेज की फाइन आर्ट समिति इनारा और इनैक्टस समिति ने 'कलाकृति' दीया सजावट कार्यक्रम का आयोजन किया। छात्र संघ ने भी इसे सफल बनाने में सहयोग दिया। आयोजन में सभी विभागों के 60 से अधिक विद्यार्थियों ने भाग लिया।

रंग बिरंगे आयोजन की शुरुआत महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता की शुभकामनाओं के साथ हुई। इसके बाद सभी प्रतिभागियों में दीया सजाने की सामग्री वितरित की गई। प्रतिभागियों ने खूबसूरत तरीके से तय समय में दीयों को सजाया। कई ने शिल्प कला में हुनर दिखाया, जिसमें विद्यार्थियों ने मिट्टी के दीए सहित कई तरह की चीजें बनाईं। अंत में विद्यार्थियों के बनाए दीयों को समिति की तरफ से विद्यार्थियों को दीपावली के उपहार के तौर में दिया गया। इस दौरान इनारा की संयोजिका प्रो. मुक्ता मजूमदार, इनैक्टस समिति की संयो. जिका प्रो. सीमा गुप्ता मौजूद रहीं।

एचआईवी कोई बीमारी नहीं बल्कि एक वायरस है

राम कुमार पाण्डेय

नई दिल्ली। एचआईवी से जुड़ी महत्वपूर्ण जानक. ारियां विद्यार्थियों से साझा करने के लिए राम लाल आनंद महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई की ओर से विश्व एड्स दिवस पर एड्स और एचआईवी के संबंध में जागरूकता लाने के लिए सेमिनार आयोजित किया गया। 29 नवम्बर 2023 को आयोजित सेमिनार की थीम 'बराबरी : कलंक और भेदभाव खत्म करो' रखी गई। साथ ही इस संवेदनशील मुद्दे पर चर्चा करने के लिए मुख्य वक्ता के रूप में रोहित सरकार को आमंत्रित किया गया, जो एचआईवी/एड्स अलायंस के प्रोग्राम मैनेजर हैं।

रोहित सरकार ने अपने वक्तव्य में एड्स और एचआईवी से संबंधित अनेक पहलुओं पर बात करते हुए बताया कि एचआईवी कोई बीमारी नहीं बल्कि यह एक वायरस है। रोहित सरकार ने वीडियो प्रदर्शनी के माध्यम से अपनी बात को समझाने का प्रयास किया कि किस प्रकार एचआईवी वायरस हमारे शरीर में प्रवेश करता है तथा हमे प्रभावित करता है। हमारे शरीर में एचआईवी वायरस आने के बाद किस प्रकार उसके लक्षण हमे दिखने लगते हैं। आगे उन्होंने बताया कि अभी तक एचआईवी का इलाज पूर्ण रूप से सफल नहीं हो पाया है। हमारे पास अभी तक ऐसी कोई तकनीकी पद्धति नहीं है, जिससे एचआईवी वायरस को शरीर से नष्ट किया जा सके या उसके प्रभाव को रोका जा सके। रोहित सरकार ने एचआईवी की उत्पत्ति, एक शरीर से दूसरे शरीर में संचरण, एचआईवी के रोकथाम के उपाय और एचआईवी से बचने के लिए आवश्यक दवाइयों के बारे में भी चर्चा की। इस मौके पर इकाई के प्रोग्राम ऑफीसर डॉ. अनुराग शर्मा मौजूद रहे।

संरक्षक मंडल

प्राचार्य

प्रो. राकेश कुमार गुप्ता

विभागाध्यक्ष

प्रो. राकेश कुमार

परामर्शदाता

डॉ. अटल तिवारी

संपादक

कंचन गुप्ता

संपादकीय सहयोग

पवन कुमार